प्रातः क्लास 19-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझाते हैं। तुम जब अपने2 गांव से निकलते हो तो यह बुधि में रहता है कि हम जाते हैं शिव बाबा के पाठशाला में। ऐसे नहीं कि कोई साधु सन्त आदि का दर्शन करने वा शास्त्र आदि सुनने आते हो। तुम जानते हो हम जाते हैं शिव बाबा के पास। दुनिया के मनुष्य तो समझते हैं शिव ऊपर में रहते हैं। वह जब याद करते हैं तो आंखें खोलकर नहीं बैठते। वह आंखें बन्द कर ध्यान में बैठते हैं। शिवलिंग जो देखा हुआ है उसकी याद में बैठते हैं जो जो भी शिव के पुजारी हैं। अभी तो अनेकानेक को याद करते रहते हैं। भल शिव के मंदिर में जावेंगे तो भी शिव बाबा को याद करेंगे तो ऊपर में देखेंगे। वा मंदी याद आवेगा। आंखे बन्द कर बैठते हैं। समझते हैं दृष्टि कहां भी नाम रूप में जावेगा तो हमारी याद टूट जावेगी। अभी तुम बच्चे जानते हो भल हम शिव बाबा को याद करते थे, कोई कृष्ण को याद करते थे, कोई राम को याद करते थे, कोई अपने गुरु को याद करते थे। गुरु का भी छोटा साकेट बनाकर पहनते थे। भक्ति मार्ग में तो सभी ऐसे ही हैं। घर बैठे भी याद करते हैं। फिर उनकी याद में यात्रा करने भी जाते हैं। चित्र तो घर में भी रख पूजा कर सकते हैं ना। परन्तु यह भी भक्ति के रसम रिवाज पूरे हुये। जन्म-जन्मान्तर यात्राओं पर जाते हैं, चारोधाम की यात्रा करते हैं। चार धाम क्यों कहते हैं वेस्ट ... ईस्ट चारों का चक्र लगाते हैं। भक्ति मार्ग जब शुरु होता है तो पहले एक की भक्ति जाती थी। इसको कहा जाता है अव्यभिचारी भक्ति। सतोप्र० थे। अभी तो इस समय में तमोप्रधान हैं। भक्ति भी व्यभिचारी। अनेकानेक को याद करते रहते हैं। तमोप्रधान 5 तत्वों= तत्वों का बनाया हुआ शरीर को भी पूजते रहते हैं। सन्यासियों का शरीर किससे बनता है, विकार से। तमोप्रधान तत्वों से बना हुआ मिलता है। तो गोया तमोप्रधान भूतों की पूजा करते हैं। परन्तु इन बातों को कोई समझते थोड़ेही हैं। भल यहां भी बैठे हैं परन्तु बुधि योग कहां2 भटकता रहता है। यहां तो तुम बच्चों को आंखें बन्द कर शिव बाबा को याद नहीं करना है। जानते हो बाप बहुत2 दूर देश के रहने वाले हैं। वह आकर बच्चों को श्रीमत देते हैं। श्रीमत पर चलने से ही तुम श्रेष्ठ देवता बनेंगे। देवताओं की सारी राजधानी बनेगी ना। तुम यहां बैठे अपना देवी देवताओं का राज्य स्थापन कर रहे हो। पहले तुमको पता थोड़ेही था। वह कैसे स्थापन हुआ था। अभी जानते हो। बाबा हमारा बाबा भी है, टीचर बन पढ़ाते भी हैं, और फिर साथ में भी ले जावेंगे। सदगति करेंगे। गुरु लोग किसकी गति सदगति नहीं करते हैं। यहां तुमको समझाया जाता है एक ही बाप टीचर गुरु है। बाप से वरसा मिलता है। गुरु पुरानी दुनिया से नई दुनिया में ले जावेंगे। इन सभी बातों को बूढ़ी मातायें तो समझ नहीं सकती हैं। उन्होंके लिये मुख्य बात है अपने को आत्मा समझ शिव बाबा को याद करना है। हम शिव बाबा के बच्चे हैं, शिव बाबा हमको स्वर्ग का वरसा देंगे। बूढ़ी2 माताओं को फिर ऐसी2 तोतली भाषा में फिर समझाना चाहिए। यह तो हरेक आत्मा का हक है बाप से वरसा लेना। मौत सामने खड़ा है। पुरानी दुनिया सो फिर नई जरूर बननी है। नई सो पुरानी, पुरानी सो नई बनती है। घर को बनने में कितने थोड़े महीने लगते हैं। फिर पुराना होने में तो 100 वर्ष लग जाते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो यह पुरानी दुनिया अभी खलास हो रही है। यह लड़ाई जो अब लगती है फिर वह 5000 वर्ष बाद लगेगी। यह सभी बातें बूढ़ियां तो समझ नहीं सकती हैं। यह फिर बड़ों का काम है उनको समझाना। उनके लिये तो एक अक्षर भी काफी है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। तुम आत्मा परमधाम में रहने वाली हो। यहां शरीर लेकर पार्ट बजाते हो। आत्मा यहां दुःख और सुख का पार्ट बजाती है। मूल बात बाप कहते हैं शिव बाबा को याद करो, सुखधाम को याद करो। बाप को याद करने से पाप कट जावेंगे। और फिर स्वर्ग में आ जावेंगे। अभी जितना जो याद करेंगे उतना पाप कटेंगे। बूढ़ियां तो घिरी हुई हैं सतसंगों आदि में जाकर कथा सुनती हैं। उन्हीं को फिर घड़ी2 बाप को याद दिलानी चाहिए। स्कूल में पढ़ाई होती है। क्या नहीं सुनी जाती हैं। भक्ति मार्ग में तुम ने यह बहुत ही ढेर कथायें आदि सुनी हैं। परन्तु उनसे कुछ भी फायदा नहीं होता है। जो भी दुनिया से नई दुनिया में तो जा नहीं सकते। कोई भी विद्वान पंडित आचार्य यह कोई के ख्याल में नहीं आता कि सुखधाम शान्तिधाम किस वस्तु का नाम—

है।आगे तुम भी नहीं जानते थे। बड़े2 चिन्मयानन्दसुधानन्द सुखधाम दुःखधाम को थोड़ेही जानते हैं। सुखधाम को तो वह देखते भी नहीं हैं। वह तो कह देते सुख काग विष्टा समान सुख है। तो किसको वह रास्ता थोड़ेही बतावेंगे। तुम समझते हो फिर भी कुम्भकरण के नींद में सोयेरहते हैं। सन्यासीक्या जाने सुखधाम शान्तिधाम से। शान्तिधाम का भी उन्हों को पता नहीं हैं। वह तो कहते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जावें। सुख का भी उन्हों को पता नहीं हैं। बाप कहते हैं शान्तिदेवा ... परन्तु शान्ति किस चीज़ का नाम है वह जानते ही नहीं। कुछ भी नहीं जानते। न रचयिता बाप को न रचना को जानते हैं' नेती2 कह देते हैं। तुम भी आगे नहीं जानते थे। भक्ति मार्ग को तो अच्छी रीत जानते थे। घर में भी बहुतों के पास मूर्तियां होती हैं। चीज़ वही है। कोई पति लोग भी स्त्री को कहते हैं तुम घर में मूर्ति की बैठ पूजा करो। बाहर में धक्का खाने क्यों जाती हो। परन्तु उन्हों की भावना रहती है। अभी तुम समझते हो तीर्थ यात्रा करना मानाभक्ति मार्ग के धक्के खाने हैं। अनेक बार अनगिनत बार तुमने 84 का चक्र खाया है। सतयुग त्रेता में तो कोई यात्राहोती ही नहीं। वहां कोई मंदिर आदि होता ही नहीं। यह यात्राएं आदि सभी भक्ति मार्ग में ही होता है। ज्ञानमार्ग में यह कुछ भी नहीं होता। उनको कहा जाता है भक्ति। ज्ञान देने वाला तो एक बाप के सिवाय दूसरा कोई है नहीं। वही ज्ञान का सागर है। ज्ञान से ही सद्गति होती है। सद्गति दाता एक ही बाप है। श्री श्री शिव बाबा ही कहते हैं। उनको टाईटल की दरकार नहीं। यह तो बड़ाई करते हैं। उनको तो कहते ही हैं शिव बाबा। तुम बुलाते भी हो शिव बाबा हम पतित बन गये हैं। हमको आकर पावन बनाओ। भक्ति मार्ग के दुवण में गले तक फंसे पड़े हैं। फंस कर फिर चिल्लाते हैं। विभय वासना के दुवण सेएकदम फंस पड़ते हैं। सीढ़ी नीचे उतरते2 फिर फंस पड़ते हैं गठर में। कोई को भी पता नहीं पड़ता। तब बाबा को कहते हैं आकर हमको दुवण से निकालो। बाप को भी ड्रामा अनुसार आना ही पड़ता है। बाप कहते हैं मैं बान्धयामन हूं। इन सभी को दुवण से निकालने। इनको कहा जाता है कुम्भी पाक नर्क। रौरव नर्क भी कहते हैं। यह बाप बैठ समझाते हैं। उनको पता थोड़ेही पड़ता है। तुम बाप को देखो निमंत्रण कैसा देते हो। निमंत्रण तो कोई शादी मुराद मुरादी आदि पर दिया जाता है। तुम तो कहते हो हे पतित पावन आओ। इस पतित दुनिया, रावण की पराई देश में आओ। हम गले तक इसमें फंस पड़े हैं। सिवाय बाप के और तो कोई निकाल न सके। कहते भी हैं दूर देश के रहने वाला शिव बाबा। यह रावण का देश है। सभी की आत्मा तमोप्रधान हो गई है। इसलिये बुलाते हैं कि आकर पावन बनाओ। पतित-पावन सीताराम ... ऐसे कह सभी चिल्लाते रहते हैं। सन्यासी लोग भी ऐसे बैठ गाते रहते हैं। ऐसे नहीं कि वह पवित्र रहते हैं। यह दुनिया ही पतित है ना। रावण राज्य है। इनमें तुम फंस पड़े हो। फिर भी निमंत्रण दिया है बाबा आकर हमको कुम्भी पाक नर्क से निकालो। तो बाप आये हैं। कितना तुम्हारा ओबीडियन्ट सर्वेन्ट है। तुम काम चिता पर जल मरे हो। अभी बुलाते हो बाबा आओ इस दुःखधाम के गठर से निकालो। बाप कहते हैं तुम भी तमोप्रधान थे ना। मुझे पत्थर भित्तर में कहते थे। गालियां देते थे कच्छ मच्छ अवतार, वराहअवतार। कितनी गाली देते थे। याद है? यह भी खेल है। कितना अपकार करते हो। बाप फिर भी आकर उपकार करते हैं। तुम पूज्य सो देवता थे। फिर पतित बनते हो तो गालियां देते हो। कण2 में परमात्मा कह देते, कितनी कड़ी गाली है। आधा कल्प गर्भ जेल में भी सजाएं भोगी हैं। दुःख भी भोगे हैं। आयु भी छोटी। अकाले मृत्यु होता आया है। ड्रामा में अपार दुःख तुम बच्चों ने देखी है। टाईमवेस्ट होता जाता है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे से। पुजारी बन कितनी गालियां दी हैं। अभी तुमको क्या कहें। उल्लू पानी कहें। सिकल मनुष्य जैसी थी सीरत बन्दर मिसल थी। अभी मैं आकर तुमको इन ल०ना० जैसा बनाता हूं। फिर तुम आधा कल्प राज्य करेंगे। स्मृति में लाओ। अभी टाईम बहुत ही थोड़ा है। मौत शुरू हो जावेगा तो फिर मनुष्य वैरागी हो जावेंगे। 3-4 बर्ष में क्या हो जावेगा। कई तो ठका सुनकर ही हार्ट-फेल हो जावेंगे। मरेंगे ऐसे जो बात मत पूछो। बढ़ियां देखो कितनी आई हैं। विचारी कुछ भी समझ न सकें। जैसे तीर्थों पर जाते हैं ना तो एक दो को देख बेयार हो जाते हैं। हम भी चलते हैं। अभी तुम समझते हो —

19-10-68 3 19

भक्ति मार्ग की तीर्थ यात्रा का अर्थ ही है सीढ़ी नीचे उतरना। तमोप्रधान बनना। बड़ी ते बड़ी यात्रा तुम्हारी यह है। जो तुम पतित दुनिया से पावन दुनिया में जाते हो। तो इन बच्चों को कुछ न कुछ शिव बाबा की याद दिलाते रहो। उच्च पद तो पा न सकें। बाकी हां स्वर्ग में आवेंगे। शिव बाबा का नाम याद है, थोड़ा बहुत सुनते हैं तो स्वर्ग में आवेंगे। यह फिर जरूर मिलना है। बाकी पद तो है पढ़ाई से। उसमें बहुत फर्क पड़ जाता है। उच्च ते उच्च फिर कम से कम। रात-दिन का फर्क पड़ जाता है। कहां प्राईम मिनिस्टर-प्रजीडेन्ट कहां नौकर चाकर मेहतर आदि। राजधानी में तो नम्बरवार होते हैं ना। स्वर्ग में भी राजधानी होगी। परन्तु वहां पापात्मा गंदे विकारी नहीं होंगे। वह है ही निर्विकारी दुनिया। तुम कहेंगे हम यह ल0ना0 जरूर बनेंगे। तुमको हाथ उठाते देख बुढ़ियां आदि भी हाथ उठा लेंगी। समझती कुछ भी नहीं हैं। फिर बाप के पास आये हैं तो स्वर्ग में तो जावेंगे ही। परन्तु सभी ऐसे थोड़ेही बनेंगे। बाप कहते हैं मैं गरीब निवाज हूं। बाबा तो गरीबों को देख खुश होते हैं। भल कितने भी बड़े ते बड़े साहुकार पदमपति हैं उनसे भी यह उच्च पद पावेंगे 21 जन्मों के लिये। यह भी अच्छा है। बुढ़ियां जब आती हैं तो बाप को खुशी होती है। फिर भी श्रीकृष्ण पुरी में तो जावेंगी ना। यह तो है रावण पुरी। जो अच्छी तरह पढ़ेंगे तो कृष्ण को भी गोद में झूलावेंगे करेंगे। प्रजा थोड़ेही अन्दर आ सकेंगी। वह तो कब करके दीदार करेंगे। जैसे पोप दीदार कराते हैं ना झरके से। लाखों आकर इकट्ठे होते हैं दर्शन करने। तुम कहेंगे वह तो पतित हैं। पतित का पतित दीदार कर क्या करेंगे। ईश्वर पावन तो एक बाप ही है जो तुमको ईश्वर पावन आकर बनाते हैं। सारे विश्व को सतोप्रधान बनाते हैं। वहां यह 5 भूत रहेंगे नहीं। 5 तत्व भी सतो0 बन जाते हैं। तुम्हारे गुलाम बन जाते हैं। कब भी ऐसी गर्मी न होगी जो नुकसान हो जाये। 5 तत्व भी कायदे अनुसार चलते हैं। अकाले मृत्यु नहीं होती। अभी तुम स्वर्ग में चलते हो तो नर्क को बुधि से भूल जाना चाहिए। जैसे नया मकान बनाते हैं तो पुराने से भी बुधि हट जाती है ना। बुधि जैसे नया मकान में ही चली जाती है। फिर ये बेहद की बात। नई दुनिया की स्थापना हो रही है। पुरानी दुनिया का विनाश होना है। तुम हो नई दुनिया स्वर्ग बनाने वाले। तुम बहुत अच्छा कारीगर हो। अपने लिये स्वर्ग बना रहे हो। कितने बड़े अच्छे कारीगर हो। अपने लिये नई दुनिया स्वर्ग बना रहे हो याद की यात्रा से। थोड़ा भी याद करो तो तुम स्वर्ग में आ जावेंगे। जैसे कोई ले सोण कराते हैं ना। थोड़ा भी याद किया तो वह भी मदद की स्वर्ग बनाने की। तुम गुप्त वेष में अपना स्वर्ग बना रहे हो। जानते हो हम इस शरीर को छोड़ फिर जाकर स्वर्ग में निवास करेंगे। तो ऐसे बेहद के बाप को भूलना न चाहिए। अभी तो तुम स्वर्ग में जाने लिये पढ़ रहे हो। अपनी राजधानी स्थापन करने मेहनत कर रहे हो। यह रावण की राजधानी ही खलास हो जानी है। तुम कहेंगे हम श्रीमत से स्वर्ग स्थापन कर रहे हैं। अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए। अब हमने यह स्वर्ग तो अनेक बार बनाया है। राजाई ली है फिर गंवाई है। यह भी याद करो तो बहुत अच्छा। हम स्वर्ग के मालिक थे। बाप ने हमको ऐसा बनाया था। बाप को याद करो तो भी तुम्हारे पाप भस्म होंगे। कितना सहज रीति तुम स्वर्ग स्थापन करते हो। कोई मिट्टी, ईंट आदि उठानी पड़ती है? कुछ भी नहीं। शिव बाबा ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना कर रहे हैं। पुरानी दुनिया के विनाश के लिये कितनी चीजें निकलती रहती हैं। कुदरती आपदायें, मुसलों आदि द्वारा सारी पुरानी दुनिया खत्म हो जावेगी। अभी बाप आये हैं हमको श्रेष्ठ मत देने श्रेष्ठ स्वर्ग की स्थापना करने। उसमें फिर हम सर्व देवतायें ही राज्य करेंगे। अनेक बार तुमने यह स्थापन की है। तो बुधि में याद रखना चाहिए ना। अनेक बार राज्य लिया है और गंवाया है। यह ही बुधि में चलता रहे। एक दो को यह बातें सुनाओ। दुनियावी बातों में समय न गंवाना चाहिए। बाप को याद करो। स्वदर्शनचक्रधारी बनो। यहां बच्चों को अच्छी रीत सुनकर फिर उगारना। सिमरण करना है। बाबाने क्या सुनाया। शिव बाबा और वर्से को तो जरूर याद करना चाहिए। बाप तिरी पर हस्त ले आते हैं। पवित्र भी बनना है। पवित्र न बनेंगे तो सजा खानी पड़ेगी। बहुत छोटा पद पा लेंगे। स्वर्ग में उच्च पद पाना है तो अच्छी रीत धारणा करो। बाप रास्ता तो बहुत सहज बताते हैं। अच्छा गुडमार्निंग।